पत्रिका. भोपाल
5 OCT 2011

बेटी बचाओ अभियान

प्रसंगवश

प्रदेश में 5 अक्टूबर को शुरू होने वाला 'बेटी बचाओ अभियान' न सिर्फ राज्य बल्कि पूरे देश के लिए जरूरी है। राज्य के लिए इसलिए कि यहां एक हजार लड़कों पर लड़कियों की संख्या 912 है और यह पिछली जनगणना के आंकड़े (932) से 20 कम है। देश की स्थिति भी कमोबेश ऐसी ही है। कारणों में जाएंगे तो पाएंगे कि हमने कहीं न कहीं बच्चियों की सार संभाल और उनके प्रति नजरिए में कोर कसर छोड़ी है। इन हालात में किसी राज्य का बच्चियों के लिए इस कदर आगे आना निःसंदेह सराहनीय है। अभियान के श्रीगणेश का समय भी इस दृष्टि से बिलकुल सही है कि नवरात्री से बेहतर समय नहीं हो सकता। इसी दौरान जब मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान कन्याओं के पैर धोकर उनका पूजन करेंगे, तो प्रदेश में लड़कियों के प्रति अच्छा संदेश जाएगा ही। यही उपक्रम उनके मंत्री अपने-अपने क्षेत्रों में करेंगे। सरकार का कदम इसलिए भी साधुवाद का पात्र है कि यह सिर्फ प्रतीकात्मक (एक दिन) नहीं होगा, बल्कि निरंतर बच्चियों की चिंता करते हुए उनके ध्यान, उनके अस्तित्व और मान सम्मान की रक्षा व महत्व के कार्यक्रम छोटे से लेकर बड़े स्तर पर आयोजित होते रहेंगे। अभियान की व्यापकता का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि इस पर सौ करोड़ रुपए से ज्यादा खर्च होंगे। अभियान का मुख्य जोर शिक्षा और जागरूकता पर है, क्योंकि सामाजिक बुराई दूर करने में ये अहम हथियार होते हैं। इसके बाद थोड़ी जरुरत होती है सख्ती की, सो सरकार ने यह व्यवस्था भी की है कि अभियान के दौरान बच्चियों के अस्तित्व पर संकट डालने वाले कारणों को दूर करने के भी निरंतर उपाय होते रहेंगे। मध्यप्रदेश में बालिकाओं को सुरक्षित रखने के लिए लाडली लक्ष्मी योजना बहुत पहले से चल रही है। इसमें एक और मोती के रूप में मुख्यमंत्री कन्यादान योजना जुड़ी हुई है और अब जबकि इसमें बेटी बचाओ अभियान का भी समावेश हो रहा है तो यह उम्मीद बेमानी नहीं होगी कि हमारे प्रदेश की बेटियां सुरक्षित व सम्मानित रहेंगी और अभियान का संदेश देशभर की बेटियों का अस्तित्व बनाए रखने में सहायक होगा। जरूरत है तो बस इन योजनाओं का ईमानदारी से पालन करवाने की।